

“कवि परिचिति”

नाम

राम लोचन ठाकुर ।

अन्य नाम : अग्रदूत, कुमारेण काश्यप ॥

•

स्थायी पता

ज्योतिरीश्वर चौक,

ग्रा० एवं पत्रालय : पाली मोहन (बाबू पाली),

खजौरी/मधुबनी,

मिथिला ॥

•

वर्तमान पता

३३/५, छा० देवदार रहमान रोड,

कलकत्ता-७०० ०३३ ॥

•

प्रकाशन

इतिहासहंता (कविता संग्रह, १९७७)

बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य, १९८१)

प्रतिध्वनि (विदेशी कविता, १९८२) ॥

•

सम्पादन

अग्निपत्र (मैथिली युवा लेखन संकलन, मासिक)

रंगमंच (नाट्य विषयक पत्र)

सुल्फा (मिनि कविता-पत्र)

प्रतिध्वनि

प्र ति ध्व नि

बानबोने गुरु

प्र ति ध्व नि

(विदेशी कविता)

+

मैथिली

राम लोचन ठाकुर

✱

अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता

प्रतिध्वनि

विदेशी कविताक मैथिली रूपान्तर

पहिल खेप—मार्च १९८२

दाम—चारि टाका

सर्वाधिकार : श्रीमती सीता देवी ठाकुर

प्रकाशक :

अरुणोदय प्रकाशन,

३३/५, डा० देवदार रहमान रोड,

कलकत्ता-७०००३३

मुद्रक :

पायनियर आर्ट प्रिन्टर्स,

३२-बी, वृन्दावन बैशाख स्ट्रीट,

कलकत्ता-५

PRATIDHWANI (POEMS)

Maithili

by Ram Lochan Thakur

समर्पण

९ दिसम्बर १९८० क

मैथिली आन्दोलन के

तथा

मिथिला विभूति

महर्षि भोला लाल दास

ओ

वीरकवि

राघवाचार्य के

समस्त

श्रद्धा आ सिनेहक संग

— राम लोचन ठाकुर

निज भूभाषा हित मरय, मरय ने अमर बनैत अछि ।
तकरे गाथा चिरय है, गाओत सदा गवैत अछि ।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

—ऋग्वेद १/८६/१

अक्षेत्रचित् क्षेत्रविदं हयप्राट्

स प्रैति क्षेत्र विदानु शिष्टः।

एतद्वै भद्र मनशासन स्यात्

वर्ति बिन्दत्यञ्जसीनाम् ॥

—ऋग्वेद १०/३२/७

बालचन्द विज्जावइ भाषा

दुह नजि लगइ दुञ्जन दासा

ओ परमेसर हर शिर सोहइ

ई गिबइ नाबर मन मोहइ

वैसिल बयना सबजन मिट्ठा

तैं तइसन जम्पओ अबहइ

—विद्यापति

संविधानक पन्ना मे
सरकारी फाइल मे
नेनाक पोथी मे
हमही लड़ेत छी
हमही मैनेट्रन मे
हमही बेलफास्ट मे
हमही लिबरपूल मे, लंदन मे
ईरान-अफगानिस्तान मे
हमही लड़ेत छी।

— जीवकान्त

संविधान बिनु मैथिलीक आ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
ढाहि-जारि सुझाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जुआन।

— रामलोचन ठाकुर

कविता-क्रम

माओ से तुंग (चीन)

दीर्घ अभियान ११

कनलून १२

हो बि मिन्ह (वियतनाम)

हजार कविक कान्य-संकलन पाठ १३

धनकुटनी १३

जीवन-पथ १४

वर्तोलत ब्रेखत (जर्मन)

मजदूरक दृष्टि मे इतिहासक पोथी १५

माथ भारी अइ १७

गुंठुर प्रास

तीन प्रश्न १६

ह्रिस्तो बोतेव (बुल्गेरिया)

मातृभूमि २०

एक अज्ञातनाम कवि (फिलिस्टाइन)

राति सं २१

महमुद दारभिश

परिचय पत्र २३

तामस २६

निर्वासितक पत्र २७

एकटा लोकक बारे मे ३१

पेट्रिस लुमुम्बा (अफ्रिका)

अफ्रिकाक एकटा भोर ३२

डेविड डियोप

अफ्रिका

३५

जोस क्रेमिन्हो

भविष्यक नागरिक सभक लेल

३७

लैण्टन हिडज (अमेरिका)

निम्नो

३८

हम एगो पिरथीक सपना देखने छी

३९

पाब्लो नेरुदा (चिली)

आर किलु नवि

४०

लू शुन (चीन)

आत्म प्रतिकृति मे लिखित

४१

एकटा कविता

४१

एगो शिल्पीक निमित्त

४२

शेख अयाज (पाकिस्तान)

मारुभूमि

४३

कयामत के आगि

४४

भयावह राति

४५

एच० सयेह (इरान)

जुलूस

४६

आजुक कविता

एक युग छलैक जखन कविता राजदरबार मे नचैत बारांगनाक घुंघरूक संग आ मंदिर मे नचैत देवदासी तथा बजैत मालि-मिरदंगक संग सूर-ताल मिलबैत छल। कविताक कथ्य नर्तकीक थिरकनाइ-लचरुनाइ तथा देवी-देवताक अलौकिक रूप-गुणक चारुकाव चक्रमाउर दैत छल। तँ कविता लहटगर-चढ़टगर आ मनमोहक होइत छल। इएह कारण छलैक जे कौंचक चित्कार सं व्यथित भ जे आदिकवि लेखनी घेड़नि, ओहो अन्त तक एकर निर्बाह नहि क सकलाह आ अलौकिक सत्ता, फुसियाही मर्यादाक पाछां भासि गेलाह। हुनक अपनहि सिरजल मर्यादा पुरुषोत्तम राम कतेको तारा आ मंदोदरी के बिधवा बनओलनि आ तैयो संतोष नहि भेलनि त अपन अर्द्धांगिनी धरतीपुत्री सीता के पूर मास मे बन पठा देलनि। कहबाक प्रयोजन नहि जे तत्कालीन कविता के लोकजीवन सं मिसियोभरि सम्पर्क नहि छलैक। रहबे केना करितैक जखन कि कवि स्वयं सर्वसाधारण सं कोसोदूर राज्याश्रित वा देवाश्रित रहैत छलाह।

आजुक कवि राज्याश्रित वा देवाश्रित नहि, अपन बुत्ता पर आश्रित अइ। ओ खेत-खरिहान मे, खान-कारखाना मे आफिस-अदालत मे खटेइ। ओ मात्र सर्वसाधारणक संग रहितैटा नहि अइ, अपितु अपनो सर्वसाधारण होइए आ तँ सर्वसाधारण लोकक जीनगीक समस्त नीक बेजाय ओकरो संग घटैत छैक। इएह आजुक कविताक कथ्य होइए। तँ आजुक कविताक मे अतर-गुलाबक गन्ध नहि लोहा-कोयला आ घामक गन्ध पाओल जाइए, घुंघरू ओ मालिमिरदंगक संगीत नहि मशीनक

प्रतिबन्नि]

[६

हड़हड़ी-घड़घड़ी रहैए। आजुक कविता अलंकारक बोझ बाहरो आडम्बर सं मुक्त अइ, ओकर स्वास्थ्य आ सबल देहे सौन्दर्यक आधार छइ।

आइ सम्पूर्ण मानव समाज दू भाग मे बंटल अइ—शोषक आ शोषित। मनुक्खक शोणित पीवाक अभ्यासी नरपिशाच शोषक वर्ग अपन अधिकार छोड़वा लेल प्रस्तुत नहि। ई वर्ग बहुकपिया सन अपन रूप बदलि विभिन्न क्षेत्र मे शोषण करहल ए। दोसर दिस शोषित वर्ग संगठित भ रहलए आ शोषण सं मुक्तिक निमित्त संघर्षरत अइ। शोषण मुक्त समाज गठनक कल्पना के साकार केनाइ ओकर लक्ष्य छैक। आजुक कविता एही शोषित वर्गक पक्षधर अइ, जे मात्र शोषित-निपोडितक कथा-व्यथा के रूपायितें टा नहि करैछ, अपितु ओकरा मे मुक्ति चेतना आ संघर्ष चेतना जगवैछ। तें आजुक कविता विलासिताक उपादान नहि, संघर्षक साधन थिक। ई मदिरा जकां कामोत्तेजनाक नहि संजीवनी सुधा जकां संघर्ष चेतनाक जन्म दैछ। ई बारांगना जकां अंकशायिनी बनि वासनाक क्षणिक तृप्ति प्रदान नहि करैछ, अपितु जीवनसंगिनी बनि अपन लक्ष्यतक पहुँचवाक शक्ति प्रदान करैछ।

एहिठाम हम कहि देबय चाहैत छी जे प्रस्तुत संग्रहक कविता सभक चयन करैत काल मैथिली आन्दोलनक बात सदिखन हमरा मन मे छल। हम मानैत छी जे मैथिली आन्दोलन आ अफ्रिका वा फिलिस्टाइनक मुक्ति आन्दोलन मे कुनू पार्थक्य नहि छैक। हम मानैत छी जे मैथिली भाषीक लेल हिन्दी, अफ्रिकाक जनताक लेल अफ्रिकांश आ पाकिस्तानक सिन्धी भाषीक लेल—उर्दू एके मुरसा राक्षसीक विभिन्न रूप थिक। सम ठामक जनता अपन भाषा-संस्कृति, जातीय मुक्तिक लेल एक रंग आकुल-व्याकुल अइ, संघर्षरत अइ। आ तें कविता अफ्रिकाक हो वा फिलिस्टाइनक, पाकिस्तान वा मिथिलाक—सभक कथ्य आ स्वर एके छैक जेना एक दोसराक प्रतिध्वनि हो।

● रामलोचन ठाकुर

माओ त्से तुङ

दीर्घ अभियान

लाल फओज निर्भोक दीर्घ पथ यात्रा बहु बाघाक
पर्वत नदी भरल पथ दुर्गम तदपि न किछु चिन्ताक
पाँच शिवर पथ बक्र नदी फेनिल पुनि ठेप फराक
फानि जाइछ जनु ठेप मु' पर्वत बिनु शंकाक
चिनशा स्रोत प्रहार करय जनु सदिखन तप्त शिलाक
तातु नदी पर पूल बनाओल हिम-सिक्किड़ लोहाक
हंसी-खुशी तुषार पथ शतयोजन नम्मा मिनसाक
कय गेल पार लाल सेना विजयक आनन्द फराक

★

कुनलुन

बहुत दूर पिरथी सं नीलाकाश बीच बसि
 तों कुनलुन बनैया, सभटा देखि चुकल छे
 लोक जगत मे जतवा जे छल नीक
 तीस लाख स्वेतांग सर्प तोहर चढ़ैत अछि
 सर्दहि जमल बसात बर्फ मड़ि मड़ि खसैत अछि
 ग्रीष्म काल मे पघिलव हो प्रारम्भ
 पावि अधिक जल पोसय नदी - नद दम्भ
 माछ काछु सन जीनगी लोकक बना दैत अछि
 युग-युग सं चलि रहल तोहर ई खेल
 के क सकल विचार थिक उपकार ने अत्याचार
 तें कहैत छी आइ सुनै कुनलुन
 आर जुनि ठठा माथ बर्फ अम्बार
 नहि त ऐइखन पकड़व हम तरुआरि
 तीन खण्ड क काटव—
 पहिल खण्ड यूरोप पठाएव
 दोसर खण्ड अमेरिका
 तेसर रहते पूर्वदेश मे,
 तखन विश्व मे शान्तिक इष्ट निवास
 सभ केओ पाओत समाने सदी ताप

★

हो बि मिन्ह

हजार कविक काव्य-संकलन पाठ

बर्फ आर फूल

बसात आर चान

कुहेस, पहाड़ आर नदी—

इपह सभ प्राकृतिक सुन्दरता ल के

गीत गेनाइ नीक लगनि

पहिलुका कवि लोकनि के

आइ कालि हम सभ

लोहा आ कोइला ल के

कविता रचव

आर कवियो के

आक्रमण परिचालना

सिखहि पड़तनि

★

धनकुटनी

ढेकी मे धान कतेक कष्ट पवेछ !

किन्तु, कुटल भ गेने

सज्जर दप दप चाउर बनि बहार होइछ,

एहि पिरथी पर मनुखलोक संग

ठीक एहिना होइत छैक

विपत्तिक कारखाना सं चमकैत

रत्न बहार होइछ

★

जीवन पथ

(क)

एंच स एंच पहाड़क चोटीपर चढ़ि चुकल छी
तखन
केना सोची जे
आर बेसी विपत्तिक सामना करय पड़त समतल मे ?
पहाड़पर बाघक मोकाबिला केने छी
देह मे नखोड़ो ने लागल अइ
मनुक्खक मोकाबिला केने छी समतल मे
आ ओ सभ हमरा जइल मे वनन क क बैसल अइ.

(ख)

बिशिष्ट एगो भद्रलोक सं
भेंट करै लेल
चीन देशक यात्रा केने छलहुं,
निर्जन बाट मे हठात्
माथ पर अकाश टूटि खसल
आ एके धक्का मे
सम्मानित अतिथि जकां
सोभे जइल पठा देलक,

(ग)

बिबेकक दिस सं वेकसूर
आ लोक हिसावे स्पष्ट बक्का हम,
परंच हमरा चीनक दलाल कहल गेल, तें
देखिते छी जीवन पथ पतेक सोझ नहि,
बाधा विपत्ति, मर ममेला लगले रहैछ

५

बर्तोल्ल ब्रेस्त

मजदूरक दृष्टि मे इतिहासक पोथी

के बनओने छल थिविस नगरक सात सात टा द्वार ?
इतिहासक पोथी मे लिखल प्रत्येक राजाक नाम !
किन्तु बढ़का-बढ़का चाकर ठेलि-ठेलि हटओने छल जे सभ
ओ सभ कि राजा छल ?
ध्वंस भेल बेबिलोन
किन्तु प्रत्येक बेर ओकरा नव सं बनओलक जे सभ ओ के छल ?
सोनसन चमकैत लीमा नगरक निर्माण केने छल जे सभ,
नगरक कून महल मे छलैक तकरा सभक निवास ?
साम्राज्यिक रोम विजय तोरण स भरल,
किन्तु से सभ के बनओने छल ?
ककरा सभ के विजित केने छलाह सम्राट लोकनि ?
गीत-गीत मे अमर भेल अइ बाइजेन्टियन,
किन्तु, ओकर प्रत्येक घर कि राजप्रासाद छलैक ?
जाइ राति सामूद्रिक जल-प्लावन मे प्लावित भेल
पुराण कथित अतलान्तिस नगरी सन्मुख ठाढ़ भेल
हूबैत लोक के मालिकक मिजाज मे हाक देने छल
ओकरा सभक क्रीतदास के

प्रतिपत्ति]

[१५]

तरुण अलेक्जेंडर जय कैने छलाह भारत वर्ष
 जय कैने छलाह कि ओ असगरे ?
 सीजर मारि बैलओने छलाह गोल सभ केँ
 किन्तु हुनक सेना मे कि एकटा मनसियो नजि छल ?
 स्पेनक नथोबहर भ्वंस भ समुद्रक गर्भ मे चलि गेल
 कनैत-कनैत नोरक धार बहा देलनि स्पेनक राजा फिलीप,
 किन्तु आर केओ कि नजि, कानल छल ?
 सप्त वर्ष व्यापी युद्ध मे विजयी भेल छलाह महान फ्रेडरिक
 आर के सभ विजयी भेल छल हुनका संग ?
 इतिहासक पन्ना-पन्ना पर विजय कथा,
 किन्तु, विजयोत्सवक खर्च जुटओने छल के सभ ?
 प्रति दस वर्षक अन्तर एक गोटा महापुरुषक आविर्भाव
 किन्तु, ककरा सभक जेबोक शेष कैचा सं
 तैयार भेल छल ई महाआविर्भाव पथ ?
 मन पढ़ैए एहि तरहक कतेको छोट-पैघ कथा,
 एहि तरहक हजारो प्रश्न ?

✱

माथ भारी अइ

सरकार हमेसा जनता केँ कहैत रहैत छइ
 कि शासन चलओनाइ कते कठिन अइ ?
 मंत्री नजि होथि त
 फसिल माटिक भितरे गरल रहत,
 उपर नजि आओत ।
 कोइलाक एको टुकड़ी बाहर नजि बहराएत
 जं खनिज मंत्री बुधियार नजि होथि ।
 महिला गर्भवती नजि होएतीह 'पोप'क बिनु ।
 सुरक्षा मंत्री नजि रहथि
 त कुनू लड़ाइ नजि हो । आर यदि सूर्य
 प्रधान मंत्रीक आदेशक बिनु समय सं पहिने उगए
 त ओ खुलेआम प्रश्नक सामना करए—

आर जं उगिए आएल त

भरिसक ओ जगह गलत हएत
 जतए उगत ।
 एहिना मुश्किल छइ कारखाना चलओनाइ
 कारखानक मालिक कहैत छथि ।
 'शेयर होल्डर'क बिनु भित्त खसि पड़त आ
 मशीन मे बीम्ब लागि जाएत—ओ कहैत छथि ।
 आओर एते तक कि कुनू तरहें जं हर बनिओ जाए
 तैयो असंभव छइ जे ओ खेत जोति सकत

ओइ सूक्ष्म अर्थबला शब्दक बिनु
 जे बिज्ञापन-एजेन्सी किसानक लेल लिखे-ए । के
 ओकरा लग ई समाचार पहुँचाओत जे कि हरो होइ छइ ?
 आओर खेतक की हफ्त
 जं जमींदार नबि होथि ? तय छइ कि
 सरिसो बाओग क देल जाएत
 जाइठाम पहिने आल छल ।
 जं शासन केनाइ आसान होइत
 त हमर वर्तमान नेताए जकां राजनीतिक

दलो बिनु खगताक होइत ।

यदि मजदूर जनैत जे मशीन केना चलाओल जाइ छइ
 आर किसान कहि सकैत कि जमीन
 आर रोटीक बीच की सम्बन्ध छइ
 त ककरो ने शेयर-होल्डरक खगता होइत आ ने जमींदारक ।
 ई खाली ऐही लेल छइ जे हम सब बौक छी ।
 आ हमरा सब के ओइ किछुक खगता अइ
 जे चलाक अइ ।
 अथवा
 संभव छइ
 सरकार पते कठिन पइ लेल छइ
 जे लूट आ भूठ सेहो किछु सबक सीखि सकए ।

★

गुंटर ग्रास

तीन प्रश्न

•

एतय हम केना हंसू
 जतय नीक होइत कि आतंक हमरा डारि क
 शीशा क लीत,
 केना हंसू कलेबा करैत काल
 हम, जतय कूड़ा, कूड़ाए बढ़ैत रहैत छैक
 इलजेबिलक केना बात करू
 किएक त ओ मुन्नर अइ
 आओर सओन्दर्यक बात ?
 हम, जतय फोटो मे हाथ
 बिनु भातफ रहैत छैक अन्त तक
 केना लिखू
 बबुचीं पर
 कि ओ केना दूति क भरैए मोट कएल गेल
 हंस के ?
 जकर पेट भरल छैक ओ भूखहड़ताल करै-ए
 ओ मुन्नरसन कूड़ा ।
 ई बात हमरा दूटैतक हंसवैए, सत्ते
 हम 'लाज'क निमित्त एगो शब्द ताकि रहल छी ।

★

ओ मां हमर, प्रिय मातृभूमि,

किए कनैत छी हबोदेकार ?

ओ—बुगलहु, बुगलहु हम,

अहां कनैत छी मां हमर

किएक त अहां छी निपीड़ित दासो,

किएक त अहांक पवित्र आवाज, मां हमर

विशाल निर्जन मरुथल मे एकाकी निरर्थक अइ,

कानू। ओतय—सोफिया शहरक समीप—

हम देखल एक घृणित फांसी फुलैत,

आर अहांक एक सन्तान—बुलगेरिया

ओहि मे लटकल छल सर्व—प्राणहीन।

★

कविक ई अन्तिम कविता बुलगेरियाक मुक्ति संवर्षक अग्रणी योद्धा
'मासिल लेमस्की' जिनका १८७३ मे सोफिया मे फांसी देल गेल छल—
कें समर्पित अइ।

राति: बन्दी के ओकर गीत शेष करय दही

भोर हेवाक पहिने ओर दुनु पाखि

छट - पट करतैक

आ बसात मे

हिलतैक ओकर निपरान वैह

राति: तों अपन गति के मन्थर कर

मनक बात स्पष्ट क क

कइय दे हमरा

हम के, आ कि हमर व्यथा

से सभ भरिसक तों बिसरि गेल छें

आह ! हमर जीनगीक पल सभ

फेना क तोरा आखिक सोझा

शेष भेल जाइछ

सोचनहुं कष्ट होइछ

तों जुनि सोचै, (जे हम डर सं कनै छी

हमरा आखि सं आइ नोर वदै-प

अपन देशक छेल

आर पितृहीन, अभिभावकहीन

भूखल धीया पुताक लेल

हमरा चल गेने

के देतैक ओकरा सभक मुंह मे अन्न ?

हमरा सं पहिनहि हमर दू गोद भाइ

फांसीक तरुता पर जीवनबलि देने अइ

अर केना एकाकिनी

पत्नी हमर

आंखि सं बहवैत अविरल नोर बांचल रहत ?

ओकरा लेल एगो कनौसियो

हम नजि रहय देलिऐक

केना रहितैक ?

हमर देश जे

अस्त्रक लेल चित्कार करैछ

★

‘ब्रिटिस मैन्डेट’ १९३६ साल मे एहि अज्ञातनाम

अरबदेश प्रेमी कवि के फांसी देने छल। जाइ राति

एकाकी कारागार मे ओ ई गीत रचलनि ओ गओलनि

तकर पराते हुनका फांसी देल गेलनि। एहि गीतक

कुनू लिखित प्रति नहि छलैक, सर्वप्रथम एकर अंग्रेजी

अनुवाद Poetry of Resistance in occupied

Palestine मे प्रकाशित भेल छल

★

गहगुह दारमिस

परिचय पत्र

लिखि राख

हम अरब बासी

फाई नम्बर पचास हजार

संतानक संख्या आठ

अगिला गर्मी मे हमर नवम संतान जन्म लेत

तों सभ कि विरक्त भेलें ?

लिखि राख

हम अरब देशक लोक

पेशा : मजदूरी, भाइ सभक संग पाथर तोड़ैत छी

तों सभ निश्चय बुझैत छें

धीया-पुताक लेल

हमरा रोटियो तोड़य पड़ैछ

कपड़ा वा पोथोक दोकान मे

काज करय पड़त

हम कुनहुँ दिन तोरा सभक देहरि पर

भीक्षापात्र लेने नबि हएब ठाढ़

हम अरब बासी

तों सभ कि तामस केलें ?

प्रतिष्पनि]

[२३

हमर कुमू नाम नबि
 हमर चारुकातक सभ किछु
 क्रोधाग्नि मे मड़कि रहल-ए
 तैयो हम अधीर नबि भेल छी
 हमर जड़ि अइ एतय
 अलिख आ पबलर गाछक नीचा
 गरीब खेतिहरक घर मे हमर जन्म
 हरफार चलओनाइ हमर वंशगत काज
 हमर वंशक कुनू महल नबि अइ
 आऊन-घर कहने
 करचोक टाट सं घेरल एक गोठ मड़ैया
 मनुक्खक खगता ताइ सं कते मेटाइ छइ ?

लिखि राख
 हम अरब देशक लोक
 हमर केशक रंग घन-कारी
 आखि हमर
 पही सं हमर चेहराक हुलिया
 तों सभ बुझि सकैत छै
 'केफिया' आर 'अकाल' सं
 हमर माथक मुरेठा तैयार
 हमर दुनू हाथ पाथर सन सकत
 क्षत-विक्षत
 हमर प्रिय भोजन : अलिभक तेल
 आर सुगन्धित साग

ठेकाना : एगो बिसरलसन निरीह गाम
 ओतुका बाटघाटक कुनू नाम नबि

ओतुका लोक सभ
 खेत मे आ पहाड़ पर काज करैछ
 मनुक्खक बंचबाक लेल
 ई कि पर्याप्त छइ ?
 तों सभ हमर अंगुरक खेत छीनि छेने छें
 जाइ खेत मे हम फखिल फड़वैत रही
 सेहो खेत छीनि छेने छें
 कठोर पाथरक अतिरिक्त हमर नेना सभक लेउ
 तों सभ किछु नबि रह्य देखै
 सुनबा मे अबैए
 तोंरा लोकनिक सरकार ने कि से पाथरो
 ल छेत
 तखन
 पहिनहि तों सभ लिखि राख
 हम ककरो घृणा नबि करैत छी
 हम ककरो किछु हरण नबि कएल
 किन्तु हमरा जं उपास उ रहवाक लेउ
 बाध्य कएल गेल
 त हम अत्याचारी कं रिहाइ नबि देवैक
 ओकर माउस नोचि क खा जेवैक
 सावधान
 हमर भूख आ तामस सं
 तों सभ खेला जुनि कर

हमर हृदयक रक्त-पद्म सम
जरी के सियाह भ गेल
हमरा मुंह सं
अग्नि कण छिटकल .
भुक्खर दानबदल
कून बन, कून नर्क सं
तों सम आबि हाजिर भेलें ?
दुखक आनुगत्य मानि लेबाक हम शपथ लेने छी
भूख आ निर्वासनक संग मिलओने छी हाथ
हमरा हाथक नस सभ तामसे फुलि गेल अइ
हमर माथक नस सभ ऋद्ध
हमर घमनीक रक्तलोट ओकर प्रवाह
माफ कर, गीत कविताक विश्वास हमरा लेल नबि
प्रबल शक्तिमान अरण्य मे
फूलो के आदिम अरण्य बनि जाय पड़ैत छैक !
हमर अति प्राचीन गहवरक बीच
हमर कलान्त स्वर बिभ्राम करओ
इएह हमर थंजणा
बालुक उपर अथवा मेवक नीचा
एक गोठ प्रचण्ड आघात
एखन एतबे पर्याप्त जे हम तामसे लाल भ गेल छी
किन्तु, विप्लव हएत आगामी कालि

★

तोरा लेल हम अपन प्रणाम पठाओल
संगहि शुभकामनाओ
आर की ?
कतय सं शुरू करी आ कतय बिलमी
किछु ने जनैत छी
समय सांपसन बनटैत पुनटैत चलल जाइछ
आ दगन्त—ओकर कुनू किनारा नबि
एइ निर्वासन मे हमर सम्बल भात्र एक टुकड़ी टटाएल रोटी
व्याकुलता
आर हमर समस्त व्यर्थताक
स्तुपीकृत इतिहास
हम शुरू करी कतय सं
एतेदिन जे किछु बजलहुं
किम्बा अगो जे किछु बाजब
से सभ हमरा आपस
नबि ल जा सकैछ.
नबि क सकैछ बर्खा
किम्बा भुतिआएल ठेहिआएल कुनू चिड़ैक पांखि मे
शक्तिक संचार नबि क सकैछ
बेतार मारफद समाद पठा रहल छी
ओकरा कहियही हम नीके ना छी
हम एगो बगड़ी सं कहै छिएक

जं कुनू दिन ओकरा लग पहुँचि गेलें

हमर बात बिसरि जुनि जो

ओकरा कहियही, हम नीके ना छी

भरोसक गणप

हमर आखि एखनो ज्योतिहीन नबि भेल-ए

अकास मे एखनो चन्ना चमकै छइ

हमर पुरना पहिरन एखनो नष्ट नबि भेल-ए

अस्वीकार क क लाभ नबि

ठाम-ठिम फाटि गेल छल

हम चेफरी लगा लेने छी

एखन बेस पहिरल जा सकैछ

हमर वयस आव बीस क पार क गेल

माँ ! तौ देखने बुझि सकैत छै

हम आव समर्थ लोक जकां काज क सकैत छौ

होटल मे अइठ थारी धोइ छी

गंद्दिकी लेल चाह बनवैत छी

ओकरा सभक खुशीक लेल

बलजोरी बिहुँसि लैत छी

आने तरुण सन

कोनटा मे ओढल

कुनू तरुणी-संग गणप करै लेल

हम एखन ठाढ़ भेल सिगरेट पीवै छी

नारी बिनु जीनगी दुसह

हमर बन्धु एक टुकड़ी रोटी मज्जने छल

‘प्रत्येक राति जे लोक उपासल

ओछापन पर जाइए

तकरा जीवि क लाभे की ?’

हम नीके छी

हमरा एक टुकड़ी रोटीक सम्बल अइ

आर अइ किछु तीमन तरकारी

बैतार सं निर्बाखित सभक समाचार सुनैछी

ओ सभ कहैछ : हम सभ नीके ना छी

कैओ ने कहैछ : हम नीके नबि छी

बाबूजी केना छथि—जनबिहें

एखनो कि ओ पूजा-पाठ करिते छथि

एखनो कि ओ नेना-भुटका केँ धरती आर

अलिभ गाछ केँ सिनेह करिते छथि

संगहि भाइसभ केना अइ

बाबूजीक इच्छा सं कि सभ अध्यापक बनि गेल ?

हमर कोढ़ फाटि रहल-ए किएक बुझलें ?

कुनू सांग जं हम हठात् दुखित पड़ि जाइ

राति कि हमरा सहानुभूति देखाओत ?

बदवास्तु भ क हम एतय आयल छलहुं

कहियो फेर अपन देश घूरि नबि सकलहुं

जाइ गाछ तर हम खसल रही

से गाछ कि मन राखत जे

से मृत वस्तु एगो मनुकख थिक

हमर लाश केँ नदेयाक आक्रमण सं

बचेबाक कि ओ चेष्टा करत ?

मां

पता ने ई चिट्ठी बिपक लिखर हूं
के तोरा लग पहुँचाओत
जल-थल-नभक बाट आइ बज
आ-तौहू सभ-भ सकथै—मृत
अथवा, हमरे जकां कतौ बांचल हवें
जकर कुनू पता-ठेकाना नबि

जकरा सभक कुनू देश नबि
जकरा सभक कुनू घर नबि
जकरा सभक कुनू मंडा नबि
जकरा सभक कुनू ठेकाना नबि
तकरा सभ के जीबाक कि कुनू मोल छइ ?

★

एकटा लोकक बारे मे

ओ सभ ओकर मुंह बज क देलकै
मृत्युशिला मे बान्हि कहलकै :
तौ हत्यारा छें
ओ सभ ओकर अन्न-वस्त्र आ मंडा छीनि लेलकै
मृत्यु कोठली मे ठेलि देलकै आ कहलकै :
तौ चोर छें
सभठाम सं ओ बिताड़ित भेल छल
ओ सभ ओकर दुलरुआ बेटीओ छीनि लेलकै आ कहलकै :
तौ रिपयूजी छें

फुलल दू गोट आखि
आ शोणिताएल दू गोट हाथ के
तौ कही :
रातिक बाद भोर हेतै
जइलक देवाल टूटि जेतै
कंडो कहि क आर किछु नबि रहतै
नीरो मरि गेल, किन्तु रोम नबि मरलै
आखि सं अग्नि वर्षा क लड़ाइ केने अइ
सुखाएल गहुमक एकटा शोश सं
समस्त खेत हरियर लहलहाइत गहुम सं भरि जेतै ।

★

अफ्रिकाक एकटा भोर

निमो ! तों हजार बर्ख अत्याचार सहने छें पशु जकां
आर मरुभूमिक बसात-बसात मे उड़ैछ तोहर भग्नावशेष
तोहर आत्मा के बचा क राखक नामे
तोहर दुख-भोग के जिया क राखक हेतु
मुष्टाघातक बर्बर अधिकार
आर कशाघातक श्वेतांग-अधिकार के जिया क राखक बास्ते
तोहर मरबाक अधिकार
आर तोहर कनबाक अधिकार के चिरन्तन करबाक बास्ते
तोहर शत्रु बनओलक-ए असंख्य अनिन्द्य मुन्नर जादू मंदिर
तोरा छाती पर ओ सभ आँकि देने अइ
अन्तहीन उपास—अन्तहीन बन्धन
अरण्यक अन्तरीक्ष सं साँप जकां लक्ष्य करैछ तोरा
एक विभत्स निष्ठुर मृत्यु—
वनस्पतिक फाटल ओ शीर्षदेश सं
प्रसारित शाखा सन
गिड़हे-गिड़ह ध लेने छौ तोहर
वेह के तोहर आत्मा के
तकर बाद तोरा छातीपर छोड़ि देने छौ
एक विशाल कुटिल बिषधर
आर कन्दापर खोलैत पानि (पात्र)
सस्त आ नकली मुक्ताक चमक सं लोभा क तोहर प्रेयसी के
छोनि लेने छौ तोहर अपरिमेय ऐश्वर्य के

अन्धार गुञ्जर राति मे
तोहर गोपरी सं बहराइछ टमटमक आवाज
भामल अबैछ घर्षिता नारीक चिस्कार
तोहर विशाल कारी नदीक बह पर
तोरा आ शोणितक समुद्र बहा
काबल जहाज जा रहल-ए ओही पापभूमि दिस—
ओ सभ जकरा कहैछ मातृभूमि
मानव जतय पंक्ति
होकर जतय सम्राट
जतय तोहर सन्तान, तोहर प्रेयसी
दिन-दिन पिसाइछ
निर्मक आ भोषण शोषण-रथ-पहियातर
असह यन्त्रणा सं

ओ सभ तोरा कहने छौ

आने सभ जकां तोहूँ छें मनुक्ख
श्वेतांग देवता एकदिन सभ मनुक्ख के मिलाओत
किन्तु, कानब तोहर बन्न नजि भेल कहियो
कन्दन गीत गबैत फिरै छें
अनात्मीयक दुआरि-दुआरि
गृहहीन भिखारि जकां

जखन अन्तरक ज्वाला उठै छौ डेढ बनि वेह आ मन मे
नाचल छें भरि-भरि राति
गओने छें गीत अन्धरक गुं गुणनाइ सन
हजार बर्खक यातनाक गर्भ सं
फूटल-ए एक प्रचंड शक्ति
पौडक सुर

आग्नेय कथा कविता मे

जाज संगीतक घातवीय संकार मे

ओही वन्मादिनी सूर धुनिक मुक्त धाराक बेगक प्रचंडता मे

कापि ठठर महादेशक एइ प्रान्त सं ओइ प्रान्तधरि

अकचका क जागि ठठल समस्त संसार

बिस्मित आतंकित कान पाति सुनने अइ

से भयंकर रक्तक छंद, से भयंकर छंद संगीतक

आतंके विवर्ण श्वेतांग दल कान पाति सुनने अइ

रातिक अन्हार मे जरैत मशालसन एक नवगीत

भोर भेलै बन्धु !

आंखि खोलि देख हमरा समक मुंह दिस

चकमक करैछ एक नव शपथ

माथ ठा देख पुरान अफ्रिकाक छातीपर

आएल ए नव भोर

एते दिनक बाद आपस पाओत सर्वहारा निमो अपन

हजार बर्यक हेराएल देश

हेराएल माटि, हेराएल पानि

हेराएल विशाल नद-नदी

सूर्य उगल ए

ओकर बिकीर्ण निर्मम अग्निकण मे

सुखा जाएत तोहर आंखिक नोर

सुखा जाएत तोहर मुंहपर पसरल थूक

कंड़ी तोड़ह बन्धु ! कंड़ी तोड़ह !

कंड़ी टुटबाक संगहि

चिर दिनक हेतु शेष हएत तोहर

दुखह दुखक धारून दुर्दिन

कारी माटिक छाती फारि माथ ठठा ठाढ़ हएत

एक स्वाधीन निर्भीक कांगो

कारी माटिक अन्हार मे कारी बीजक भितर सं

कारी मुकुल-मंजरित

आलोकक आकाश मे

माथ ठठा ठाढ़ हएत

कांगो

हमर कांगो

डेभिड डियोप

अफ्रिका

•

अफ्रिका !

हमर अफ्रिका !

अतीतक वीर योद्धा समक गर्व गर्विता अफ्रिका

दूर नदी किनार पर बंसेलि मैजा जकरे गो ! गवेछ

सएह अफ्रिका—

सरिपहुं, हम कहियो ने चीन्हल

किन्तु, हमर नस-नस मे बहइछ तोरे शोणित

तोरे सुन्नर कारी शोणित

जेना प्राण-रस जल धरती हित

तोहर

घामक शोणित
श्रम केर घाम
दासताक श्रम
वंशघरक दासत्व

अफ्रिका तों हमरा कह
मुकल देह कि इपह थिकें तों ?
अपमानक भारी बोमें कि टूटि गेल छौ हांड
भुजरी भुजरी पीठ भेल छौ शोणिते-शोणितान
दुपहरिया के पखर रौद आ चाबुक केर आघातें
जे 'ह' छोड़ि ने कहियो 'नञि' बाजैछ

किन्तु वेश गंभीर स्वरे' जनु केओ हो दैत जबाब—
ठीठ बालक ! सामने मे देखै छँ ओ गाछ

पूर्ण सतेज - सबल

उज्जर-दपदप निष्प्राण फूल केर बीच एकाकी अइ ठाढ़
वपह थिक अफ्रिका, तोहर अफ्रिका—सहिष्णु
किन्तु, अनिवार्य रूप सं जे बेर-बेर बढ़ैछ
नहु-नहु हो संजीवित
स्वाधीनताक स्वाद तिक्त

जोस क्रेमिरिन्हा

भविष्यक नागरिक सभक लल

कुनू एक ठाम सं हम आयल छलहुं ...
एहन एक जाति सं जकर पखनहुं कुनू अस्तित्व नञि

हम आयल छी आ ... पखनहुं बांचल छी

खाली हमरहिटा जे जन्म भेल छल से बात नञि
तोहर वा आर विशेष ककरो ... सेहो नञि ...
जन्म लेने छलहुं हमरा लोकनि सभ भाइ

जतबा सिनेह हमरा हृदय मे अइ, से
हम बांढि सकैत छी
ताइ सं बेसी किछु नञि

हमर हृदय आ ओकर आर्तनाद
सभ हमर एसगरेक नञि ...

हम एहन एगो देश सं आयल छी जकर पखनो जन्म नञि भेलैए

आह हमरा हृदय मे बहुत सिनेह अइ
से सभ हम बिलहि द सकैत छी
हम !

हम ओही विशेष जातिक एगो लोक
जाइ जातिक पखनहुं जन्म नञि भेलैए

★

निग्रो

हम एगो निग्रो

अन्हरिया राति सन हमर देहक रंग कारी
अफ्रिकाक अन्तस्थल सन कृष्णकाय हम

हम क्रीतदास भ जन्मल छी
सिजर हमरा आदेश देने छलाह
हुनकर दरबज्जा साफ रखबाक
बांशिगटन मे जूता-पालिस केने छी हम

हम रोज पर खटने छी :
हमरे हाथे पिरामिड तैयार भेल अइ
उल्लवार्थ प्रासादक रंग-मशाला,
हमही बनओने छी

हम गीत गबैत आयल छी
अफ्रिका सं जर्जियाघरि भरिबाट
अपन व्यथा-कथा सं पाटि देने छी
हमरा वछन्नद देल गेल अइ

हमरा उपर सभ अत्याचार केने अइ :
कांगो मे बेलजियम सभ हमर हाथ काटि देने अइ
टेकसास मे बिनु बिचारे देने अइ दंड

हम एगो निग्रो :
रातिक अन्हारक अनुरूपे हमर देह गढ़ल
अफ्रिकाक बिजन बन सन कारी
हमर देह

★

हम एगो पिरथीक सपना देखने छी

सपना मे हम पिरथी के देखि रहल छी :
जतय केओ ककरो घृणा नबि करै
जतय प्रेम पिरथी केँ करओतै मुक्तिस्नान
आ शान्तिमय हेतैक लोकक बाट

हम एहन एगो पिरथीक सपना देखने छी—
जतय मनुक्ख स्वाधीनताक मधुर स्वाद पाओत
जतय लोभ हिरदैक रस नबि चूसतैक
अथवा मोह दिन-दिन केँ
अन्हार नबि क देतै

हम सपह पिरथीक सपना देखने छी—
जतय गोर वा कारी
जे कुनू जातिक लोक किएक ने हो
पिरथीक सभ सम्पत्ति सभ मिलि बांदि छेत
जतय सभ स्वाधीन
जतय पशु प्रवृत्ति लाजे माथा मुकाओत
आ मोतीसन आनन्द
समक अभाव दूर करत
से पिरथी हमरा सभक—
हम तकरहि सपना देखैत छी

★

आर किछु नवि

आर किछु नवि

सत्यक संग हमर प्रतीक्षा

एहि पिरथोक हेतु हम संचित करव आओक

हम जे चाहे छी

से भेल रोटी

संवर्ष कूतहुं दिन नवि करत अनुभव हमर अपावक

अथच एतय जे किछु सं सिनेह अइ सब पओने छी

जे गम ओने छी से भेल निर्जनता

एखन हम आर एहि पाथरक छांह मे विश्राम नवि करे छी

समुद्र काज क रहल-ए

काज क रहल-ए निःशब्दे—हमर शक्तिबे

★

आत्म प्रतिकृति मे लिखित

पवित्र मंदिर कखनहुं नवि

धुरा सकैछ देवता केर दूमि

बर्खा आ बिहाड़ि जेना जांत मे

पीसि देत एइ देश के

शरदक मस्त तारागण हमरा

खाली उपेक्षा करैछ

हमर मनक बात जइखन

बजैए कंठ वीणाक तार सं

सुआन - युआन - वेदो मे

प्राण देव हम करैत छी प्रण

★

एकटा कविता

कांट कुल सं भरल जाइत अछि ई सभटा ग्रामांचल

युद्धक कारी सवन मेघ जाइत अछि पसरल

मुष्टिमेय किछु लोक हंसि रहल एहि मधुमासे

खून करल जाइछ बांको सब बाक् प्रतिमा के

स्वेच्छाचारी सबक हाथ मे सौंपल जाइछ राज्यकार

गजेरी भंगेरी बिबरा बुद्धि ईश्वर

हृदय मध्य टन-टन ताकय बिद्रोह

लड़ाकू जुलूस, जुलूस बीच शान्ति

मंमता चलए, जेना क्रोधित अजगरक होए फुककार

फूल-गाछ सब दलित-मथित ई कुम्भीपाक

★

एगो शिल्पीक निमित्त

नानकिह पर उमरि रहल-ए
 दुर्दिन केर बिहाड़ि
 मंषने जाइछ बन प्रान्तर के
 कारी घन अन्हार
 नीलिमा जनु कुहेसक
 गर्भस्थ हो म गेल
 फूल
 आर
 फूल
 कते फूल
 ने फड़ि गेल !
 हमर सभक प्रिय शिल्पी हे
 अंकित करह तौ
 नूतन शिल्पक एक अभिनव छवि
 नव वसन्त मे
 दूर पहाड़क
 कोरा मे
 रक्त वर्ण
 जनु उगैत
 नव रवि

★

शेखअयाज

मातृभूमि

मनुस्वक लेल
 सभ सं पवित्र
 माइक दूध
 आर ओकर लोरी थिक
 आओर ई दूध
 जाइ देशक माटि-पानि सं बनल अइ
 आओर ओ भाषा
 जाइ मे ओ लोरी गाओल जाइए
 ओतवे पवित्र थिक
 आ यदि तौ
 पहि देशक (माटिक) हेतु
 गोली नजि खा सकैत छह
 त तोहर मांक पएर
 तोरा लेल
 सदाक हेतु स्वर्गक दुआरि
 बज क देतह
 आ तौ
 प्रलय धरि
 हृदय नर्क मे
 भेड़कैत रहबह

★

कयामत के आगि

इदक दिन छइ
हमरा कत्र सं
कयामत के आगि ठि रहल-ए
किएक त
हमर पोता
हमरा कत्र पर
फूल राखि
वर्दू मे दुआ माळि रहल ए

*

भयावह राति

केहन भयावह राति छइ !
लुमुम्बाक मृत्युसन
कारी छल आ कठोरताक राति !
हमरा अचरज लगैए
कि हमर हृदय
सम्पूर्ण धरतीक हृदयक संग धड़कि रहल-ए
आ जखन
हेमिंगवे आत्महत्या केने छलाह
तखन हमर आखि सं
दहो-बहो नोर बहल छल
जेना हमर सहोदर के
गोली लागल होइ
मानव जाति मे दूरी आव नबि रहल
तैयो
हमर एइ छोट-छीन देशक व्यथा
ककरा ज्ञात छइ ?
कि एकर व्यथा
धरतीक व्यथा नबि थिक ?
कि हमर ओहने हृदय नबि
जेहन आन कुनू मनुखक ?
आर ई कारी नाग सन अन्हार राति
जखन हमरा डसि रहल-ए /
तखन केओ पहन नबि
जे हमर बिल भाड़य
आ एहि साँप सं
मुक्ति दिआबय !

*

नजि प्रिय / आब समय नजि रहल
हमर कान के नजि रहलैए अहांक मधुर प्रेमालापक अपेक्षा
अहूँ / कोनो प्रणय-गीतक आशा जुनि करू हमरा स
नजि / आब समय नजि रहल
जुलूस आगू बढ़ि गेल

अहांक-हमर प्रेमक ओ दिन / आह !

एकटा सुन्नर कल्पित कथा सन

मुदा एखन

रोटी डुमरीक फूल भ गेलए

नजि प्रिय / स्नेह आ प्रणयक समय नजि रहल आब

जन्म दिनपर हमर शुभकामना

यौवनोन्माद स परिपूर्ण / अहां

बीसटा प्रज्वलित मोमबत्तीक इजोत मे चमकत

अहांक मुखमण्डल आनन्दातिरेक स विभोर होइत रहत

आ / ओही राति

बीसटा पतझड़क मारलि अहीं ब्यसक युवती सभ/मुखले सुतत

नाटक/सर्द स्पन्दनहीन धरतीपर

अहां नाचब/ममुद्रक हिलझोर जकां

अहांक सुन्नर-सुकोमल आङ्कुर/वीणाक तार जकां कपैत रहत

आ / मोहक मादकता पसरि जेतैक वातावरण मे

मुदा / यौवनोलासक उदरुषक एही बयान मे

हजारो युवती/कठघरासन कारखाना मे

शोणितापल हाथें/मशीन चलबैत रहत

आ जत्ते अहां भिखारि के दैत हएष

ओकर बोनि हेतैक

अहां / जाइ चितार्कषक बहुरंगी कालीन पर नाचब

मनुक्खक रक्त सं रंगल अइ

ओकर प्रत्येक फानी मे / गांथर छइ

पाखण्ड / घोखा / शोषण

अहांक टेकनीकलर गलीचा

हजारक हजार निरोह अभिलाषाक शमशान अइ

हजारो युवा चिनगी नितुआन भ गेल

हजारो हाथ / झोट-झोट आ सुन्नर हाथ

नष्ट भ गेल

हजारो सतर्क आंखि भ गेल ज्योतिहीन

नजि प्रिय / आब समय नजि रहल

गीत आ चुम्बन नजि / आब

सभ किछु रक्त आ आगिक रंग घेने जा रहलए

समय आयल / मुक्ति लेल / बिहाड़ि आ बाढ़िक लेल

थम्हू / जुनि पसारु मोहक मुक्कीक जाल

प्रियदर्शिनी छवि सं हमर बाट जुनि छेकू

स्नेह / शराब आ संगीत

मुख सं परिपूरित हृदय स्पन्दन के

हमर बाधा नजि बनाव

थम्हू / मोहक मुक्कीक जाल जुनि पसारु

शाहशाहक स्वर्गद्वीप

अन्धारगुञ्ज कालकोठरी / नर्कक सहोदर / मे

निष्कासित एकाकी हमर समानधर्मा

यातनाग्रस्त भ रहल हएत

नबि प्रिय / प्रेमालाप, प्रणय-संगीतक ई समय नबि

अहां प्रतीक्षा करू

एखन हमरा जुद्धस मे सामी हेबाक अइ

ओइदिन / जहिया

रातुक कारी पर्दा के चीड़ेत

प्रभात / पसारत अपन रक्ताभ किरिनक बांहि

सभ खिड़की पर / चकमक करत

हमर कामरेड सभक मुखमण्डल / निश्छल मुश्की सं

हमहुं आयब आपस

अहांक सुन्नर-सुभित हृदय मे

चुम्बन / कविता / आ संगीतक संग

अनुवाद—कुणाल

★